International Journal of Education and Science Research Review P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org February- 2018, Volume-5, Issue-1 Email- editor@ijesrr.org

fd'kkjk dh l`tukRedrk ij fyax dk izHkko

Dr. Shweta Sharma
Lecturer
Department of Home Science
CCS University Campus
Meerut, India, U.P.

Dr. Kamlesh Sharma
Retd. Prof.
Dr. B.S. Ambedker
National Institute of
Social Science, Mahu, MP, India.

lkj&
सृजनात्मकता अथवा रचनात्मकता किसी वस्तु, विचार, कला साहित्य से सबंद्ध किसी समस्या का समाधान निकालने, किसी क्षेत्र में कुछ नवीन रचना, आविष्कृत करने या पुनः सृजित करने की प्रक्रिया है। यह एक मानसिक संक्रिया है, जो भौतिक परिवर्तनों को जन्म देती है। प्रस्तुतः अध्ययन किशोरों की सृजनात्मकता पर लिंग का प्रभाव ज्ञात करने हेतु किया गया। अध्ययन में समग्र के अन्तर्गत इन्दौर शहर के कुल 500 किशोरों (250 किशोर लड़के एवं 250 किशोर लड़कियाँ) को सम्मिलित किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु बी0के0 पासी द्वारा निर्मित, ''पासी का सृजनात्मकता परीक्षण'' प्रयुक्त किया गया। अध्ययन में प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु काई वर्ग परीक्षण प्रयुक्त किया गया। अध्ययन के परिणामस्वरूप किशोर लड़कों की अपेक्षा किशोर लड़कियाँ में अधिक सृजनात्मकता पायी गयी।

iLrkouk&
सृजनात्मकता प्रायः समस्त प्राणियों में पायी जाती है, यह अवश्य है, कि किसी में कम तो किसी में अधिक। प्रायः यह धारणा है कि केवल लेखक, कवि, चित्रकार, संगीतकार, वैज्ञानिक, फिल्म अभिनेता आदि व्यक्ति ही सृजनशील होते हैं परन्तु अब यह विचार मान्य नहीं है, क्योंकि आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सृजनात्मकता किसी भी क्षेत्र में अपना सुखद प्रभाव दिखा सकती है। अध्यापक, क्लर्क, माता, श्रमिक, रसोईया, कृषक व औद्योगिक कर्मचारी आदि अपने–अपने क्षेत्रों में सृजनशील हो सकते हैं। यदि एक माता भली–भांति बच्चे का पालन पोषण करके या अध्यापक बच्चे को अच्छी व उपयोगी शिक्षा देकर, एक रसोईया नयी संतुलित एवं पोषणयुक्त मानकों से खाद्य सामग्री तैयार करके या एक क्लर्क आफिस विकास के लिये नवीन विधियों से कार्य करके समाज एवं देश के लिये लाभकारी कार्य करे, तो निश्चित ही इन सभी प्राणियों में पर्याप्त मात्रा में सृजनात्मकता विद्यमान है।

सृजनात्मकता की परिभाषा देते हुये 'ट्रेवडाल' ने कहा है कि ''सृजनात्मकता व्यक्ति की उस क्षमता को कहा जाता है जिससे वह कुछ नई चीजों, रचनाओं या विचारों को पैदा करता है जो नया होता है, जो पहले से ज्ञात नहीं होता है।'' हैमोविज एवं हैमोविज के अनुसार ''जब परिवर्तन लाने, आविष्कार करने तथा तत्वों को इस ढंग से रखने की क्षमता जैसे वह पहले कभी न रखे गये हो, ताकि उनका महत्व या सुन्दरता बढ़ जाये, तो सृजनात्मकता की संज्ञा दी जाती है।'' आईजेनक (1972) और उनके साथियों का विचार है कि–''सृजनात्मकता वह योग्यता है, जिसके द्वारा नये सम्बन्धों का ज्ञान होता है, इसकी उत्पत्ति में चिन्तन के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विचार उत्पन्न होते हैं।''

वर्तमान समय में मनोविज्ञान एवं शिक्षा से सम्बन्धित किसी अन्य शब्द को इतनी अधिक लोकप्रियता नहीं मिली, जितनी की सृजनात्मकता को मिली है। गिलफोर्ड (1962) का यह मानना है कि यह विषय अन्तर्राष्ट्रीय रूचि का है। सृजनात्मकता में वह खिचाव तथा सामर्थ्य है जोकि विचारों एवं प्रक्रियाओं को आगे बढ़ाती है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति, समृद्धि एवं उसका अस्तित्व सृजनात्मक अर्न्तःदृष्टि पर निर्भर करता है। सृजनात्मक शक्ति का उपयोग करने पर कोई भी समाज प्रगति कर सकता है। यह व्यक्तिगत रूप से समायोजन तथा अनुकूलन में सहायता करती है। यह समाज की वृद्धि व विकास के लिये उत्तरदायी है। पेट्रिक (1955) मानते हैं कि व्यक्तिगत जीवन के दैनिक तनावों से मुकाबला करने के लिये, अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिये मनुष्य को सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है। हरफिल (1962) यह विश्वास करते हैं कि उच्चतम स्तर की सृजनात्मकता सभी मानवीय आंनदों में सर्वश्रेष्ठ है और अक्सर उच्चतम व्यक्तिगत संतुष्टि के पल देती है। टेलर (1964) यह मानते है कि सृजनात्मकता वह गुण है, जो मनुष्य के भविष्य को आकार देने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। बदलते पर्यावरण से बेहतर समायोजन तथा बेहतर अनुकूलन के लिये सृजनात्मक मस्तिष्क की आवश्यकता होती है।

रोजर्स (1954) के अनुसार वर्तमान समय में जब निर्माणात्मक एवं विध्वसंकारी ज्ञान, दोनों ही तेजी से फलफूल रहे हैं, तब

सृजनात्मकता ही व्यक्ति को उस परिवर्तनशील विश्व में अनुकूलन करने में समर्थ बनाती है। मनुष्य जितनी तेजी से विज्ञान पर्यावरण को बदल रहा है, उतनी ही तेजी से अपने पर्यावरण के साथ नये एवं मौलिक अनुकूलन स्थापित नहीं करेगा, तो हमारी संस्कृति नष्ट हो जायेगी। सृजनात्मक व्यक्तियों के व्यक्तित्व में वह गुण होते हैं, जोकि उन्हें समाज का स्वस्थ सदस्य बनाते हैं। आज का प्रतियोगिता पूर्ण संसार एवं समस्यायुक्त समाज सृजनशील मस्तिष्क चाहता है। मैकले (1945) का कथन है कि आत्मानुभूति व्यक्ति की आधारभूत आवश्यकता है तथा यह सृजनात्मक व्यक्ति में पायी जाती है। आज प्रत्येक देश के वैज्ञानिक विधियों की खोज तथा तकनीकी उपलब्धियों के लिये सृजनात्मक व्यक्तियों को ढूंढना एक आवश्यक कार्य हो चुका है। इस सम्बन्ध में टेलर (1963) का कथन यथार्थ दृष्टिकोण रखता है–

"Creative and Inventive man can do without much expensive equipment that may be required by man with less talent"

रोबिन्सन (2002) के अनुसार परिवार में लड़के लड़कियों के साथ विभेदात्मक व्यवहार होना, खण्डित घर, सत्तात्मक अनुशासन, खेलकूद सामग्रियों का अभाव व प्रत्येक कार्य में उन्हें हतोत्साहित करना आदि ऐसे कारक है, जिनसे सृजनात्मकता का ह्रास होता है। इसके विपरीत यदि किशोरों को इस प्रकार का उत्प्रेरक वातावरण दिया जाये कि वह अपने विचारों को बिना किसी दबाव के स्वतन्त्र रूप से व्यक्त कर सके, तो निश्चित रूप से उसकी सृजनात्मक क्षमताओं का उच्च स्तरीय विकास होगा। आज के व्यवसायिक परिप्रेक्ष्य मे देखे तो किशोरों को किशोरावस्था के तुरन्त बाद व्यवसायिक विषय चुनना पड़ता है और कई ऐसे व्यवसाय है, जिनमें सृजनात्मकता का होना नितान्त आवश्यक है। जैसे–फैशन, डिजाईनिंग, आन्तरिक सज्जा, गायन, पेटिंग, मूर्तिकला, विज्ञापन, लेखन व फिल्म निर्माण आदि। यदि हम सृजनात्मकता को पहचानने में, उसे विकसित करने में असफल हो जाते हैं और किशोरों की प्रतिभा को उत्पादक बनाने हेतु उचित सुविधा प्रदान नहीं कर पाते तो किशोरों की जितनी भी योग्यतायें व क्षमतायें, वह अनुपयोगी हो जायगी व बेकार चली जायेगी। इससे राष्ट्र व स्वयं किशारों की उन्नति नहीं हो पायेगी। अतः हमें किशोरों को ऐसा धनात्मक वातावरण प्रदान करना चाहिये, जिससे उनकी सृजनात्मकत क्षमतायें अधिकाधिक विकसित हो सके।

सृजनात्मकता के विभिन्न क्षेत्रों व स्तरों पर लिंग को प्रभाव देखा जा सकता है, जैसे कि लड़कियों में सौदर्यबोध, लड़कों की अपेक्षा अधिक है तो वह कला के क्षेत्र में अधिक सृजनशील हो सकती है एवं लड़के विज्ञान के क्षेत्र में अधिक सृजनशील हो सकते है। पासी (1971), मकोनी व जक्लिन (1975) के अनुसार शाब्दिक एवं अशाब्दिक सृजनात्मकता में लड़कियाँ, लडकों की अपेक्षा अधिक सृजनशील होती है।

'kks/k izfof/k&

mnns'; % किशोरों की सृजनात्मकता का उनके लिंग के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।

midYiuk % किशारों की सृजनात्मकता का उनके लिंग के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

lex% % प्रस्तुत अध्ययन में इन्दौर शहर के किशोरों को समग्र में सम्मिलित किया गया। समग्र के अन्तर्गत 250 किशोर लड़कों एवं 250 किशोर लडकियों अर्थात् कुल 500 किशोरों को सम्मिलित किया गया।

fun'kZu i)fr % प्रस्तुत अध्ययन में सोद्देश्य (उद्देश्यपूर्ण) निदर्शन पद्धति द्वारा समग्र का चुनाव इन्दौर शहर के विभिन्न विद्यालयों से किया गया।

midj.k % प्रस्तत अध्ययन के अन्तर्गत प्रदत्तों के संकलन हेतु बी0के0 पासी द्वारा निर्मित ''पासी का सृजनात्मकता परीक्षण'' प्रयुक्त किया गया।

lkf[;dh; fo'y"k.k % प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु काई वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया।

ifj.kke ,oa fo'y"k.k&

अध्ययन में पाये गये परिणाम व अन्य विश्लेषण अग्रलिखित है–

rkfydk&1
fd'kkjk dh l tukRedrk ,o mud fyx d e/; lEcU/k

श्रेणियां		लिंग		सार्थकता स्तर
		किशोर लड़के	किशोर लड़कियाँ	
सृजनात्मकता	निम्न	72	58	0.01 स्तर पर सार्थक
	मध्यम	133	110	
	उच्च	45	82	

काई वर्ग मूल्य = 14.464, मुक्तांश = 2
उक्त सारणी किशोरों की सृजनात्मकता एवं उनके लिंग के मध्य सम्बन्ध को प्रदर्शित करती है।

सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में निम्न सृजनात्मकता के अन्तर्गत 72 किशोर लड़के एवं 58 किशोर लड़कियाँ पायी गयी। मध्यम सृजनात्मकता के अन्तर्गत 133 किशोर लड़के एवं 110 किशोर लड़कियाँ पायी गयी। उच्च सृजनात्मकता के अन्तर्गत 45 किशोर लड़के एवं 82 किशोर लड़कियाँ पायी गयी।

सांख्यिकीय गणना में, 2 मुक्तांश पर काई वर्ग मूल्य = 14.464 पाया गया जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि किशोरों की सृजनात्मकता एवं उनके लिंग के मध्य सम्बन्ध है। अन्य शब्दों में, किशोर लडकों की अपेक्षा किशोर लडकियाँ अध्ययन में अधिक सृजनात्मक पायी गयी।

पूर्व में किये गये अध्ययनों में, हेलसन (1970), फिलिप्स एवं टोरेन्स (1971), मायसिन (1979), लिंच (1980), बहेरा (1998)तथा पटेल (2002) ने सृजनात्मकता एवं लिंक के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं पाया। परन्तु टोरेन्स (1965), हारलो (1967), मीडनट्स (1968), खान (1994), अग्रवाल एवं अग्रवाल (1999), तथा गारवर (2003) ने लडकों को अधिक सृजनात्मक पाया। इसके विपरी गेटजल एवं जैक्सन (1962), गिलफोड (1964), पासी (1972) तथा मैकांबी एवं जैक्लिन (1975) ने लड़कियों को अधिक सृजनात्मक पाया।
प्रस्तुत अध्ययन गेट्जल एवं जेक्सन (1962), गिलफोर्ड (1964), पासी (1972) तथा मैकॉबी एवं जैक्लिन (1975) के शोध अध्ययन की पुष्टि करता है।

REFERENCES

1. Agarwal & Agarwal (1999), "Creativity & Intelligence : Exporation with sex differences," Psycho-Lingua Vol. 29(2) 127-132.
2. Berdyaev, Nicolas (1962), "Meaning of the Creative Act", Colier Books, New York (10)
3. Boden, Margaret (1990), "The Creative Mind : Myths & Mechanisims", Weidenfeld Nicolson, London.
4. Girlford, J. P (1962), "Creativity : Yesterday, Today, & Tomorrow" in Reading in Adolscent Development", (Edited by Bernard Harold W., International Text Book Company Scranton, Pennsylvania (56-57).
5. Khan, Asif Ali (1994), "Sex & Educational Steam Difference on verbal Creative Thinking" Journal of Personality & Clinical Studies (March-Sept) Vol 10(1-2), 91-94.
6. Gakhar, S.C. & Dharmindra (2003), "Intellective & Non-Intellective Factors Associated with Mathematical Creativity at Elementary School Stage", Journal of All India Association for Educational Research, Vol. 15 (3-4), 39-42.
7. Reddy, T. Rajasekher (2004), "Creativity in Students", Discovery Publishing House, New Delhi, 43-44.